Date:
Page No.

"हिन्दी एकांकी का विकास"

आधुनिक हिन्दी साहित्य में विगत एक शताब्दी में जिन गद्यात्मक विधाओं का विकास तीव्रगामी गति से हुआ है, उनमें एकांकी का स्थान महत्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्य में एकांकी का विकास 'नाटक' के साथ-साथ हुआ है। यदि हम सामान्य रूप से देखें तो 'नाटक' एवं 'एकांकी' दोनों एक ऐसे दिखाई देते हैं, इसलिए कि एकांकी 'नाटक' का लघु 'अथवा संक्षिप्त माना जाता है। वस्तुतः ऐसा इसलिए होता है कि दोनों (एकांकी एवं नाटक) विधाओं के रूप लगभग एक जैसा है। एकांकी में नाटक के सभी तत्व मसलन – कथानक, पात्र-योजना, संवाद-योजना, देशकाल और वातावरण, भाषा-शैली, तथा उद्देश्य विद्यमान रहते हैं, फिर भी एकांकी एक स्वतंत्र विधा है। आधुनिक हिन्दी एकांकी वैज्ञानिक युग की देन है। आज विज्ञान के युग में विज्ञान के फलस्वरूप मनुष्य के समय और शक्ति दोनों की बचत हुई है। फिर भी मनुष्य के जीवन में भाग-दौड़ जारी है। इस व्यस्तता के कारण आज के मनुष्य के पास इतना समय नहीं है कि वह बड़े-बड़े नाटकों, उपन्यासों, महाकाव्यों आदि को पढ़कर उसका सम्पूर्णतः

रसास्वादन कर सके। यही कारण है कि आज गीत, कहानी, लघु कथा एवं एकांकी साहित्य के लघु रूपों को अपनाया जा रहा है। किन्तु एकांकी की लोकप्रियता का कारण मात्र समयाभाव नहीं है। एकांकी की लोकप्रियता का उल्लेख करते हुए डॉ० भोलानाथ तिवारी लिखते हैं, "यह नहीं कहा जा सकता कि चूँकि हमारे पास बड़ी-बड़ी साहित्यिक रचनाओं को पढ़ने के लिए समय नहीं है, इसलिए हम गीत, कहानी, एकांकी आदि पढ़ते हैं। बात यह है कि हम जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और समस्याओं आदि को क्रमबद्ध एवं समग्र रूप से भी अभिव्यक्त देखना चाहते हैं और उन अभिव्यक्तियों का स्वागत करते हैं मगर साथ ही साथ किसी एक महत्वपूर्ण भावना, किसी एक उद्दीप्त क्षण, किसी एक असाधारण एवं प्रभावशाली घटना या घटनांश की अभिव्यक्ति का भी स्वाद करते हैं। हम कभी अनगिनत फूलों से सुसज्जित सलोनी वाटिका पसन्द करते हैं और कभी भीनी सुगन्ध देने वाली खिलने को तैयार नहीं-सी कली। दोनों बातें हैं, दो रुचियाँ हैं, दो दृष्टिकोण हैं, समय के अभाव या अधिकता की इसमें कोई बात नहीं।"

Date:
Page No.

इस प्रकार हम देखते हैं कि एकांकी ने नाटक से भिन्न अपना स्वतंत्र स्वरूप हिन्दी साहित्य में एक विधा के रूप में प्रतिष्ठित कर लिया है। एकांकी में जीवन की एकरूपता, कथा में अनावश्यक विस्तार की उपेक्षा, चरित्र-चित्रण की तीव्र एवं संक्षिप्त रूप-रेखा, कुतूहल की स्थिति, प्रारम्भ से ही व्यंजकता की अधिकता एवं प्रभावशीलता, चरम सीमा तक निश्चित बिन्दु में केन्द्रीयकरण तथा घटना-न्यूनता आदि के कारण कथानक की गति तीव्र होती है। डॉ० रामचरण महेन्द्र के अनुसार, "नाटक में घटनाओं की व्यंजना, विस्तृत चरित्र-चित्रण, विस्तृत कार्य-व्यापार, अधिक समय और लम्बे-चौड़े स्टेज की आवश्यकता है, किन्तु एकांकी में नितव्ययिता के द्वारा ये कार्य करने पड़ते हैं।"

ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी एकांकी के विकास-क्रम को निम्नलिखित कालखण्डों विभाजित किया जा सकता है — भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग या आधुनिक युग।

हिन्दी साहित्य में एकांकी लेखन का प्रचलन भारतेन्दु युग में हुआ। यद्यपि इस सम्बन्ध में विद्वानों मतैक्य नहीं है, फिर भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रणीत 'प्रेम योगिनी' (1875) से हिन्दी एकांकी का प्रारम्भ माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त 'अन्धेर नगरी', 'वैदिकी हिंसा

हिंसा न भवति', विषस्य विषमौषधम्' आदि भारतेन्दु द्वारा लिखे गए एकांकी एवं प्रहसन हैं। भारतेन्दु जी के एकांकियों का नाट्य रूप तो पाश्चिमी शैली का है, किन्तु उनमें प्रस्तुत की गई समस्याएँ सर्वथा नवीन हैं। प्रसिद्ध आलोचक शिवदान सिंह चौहान के अनुसार, "भारतेन्दुकालीन एकांकियों की विषय-वस्तु अपने सामयिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन से ली गयी है, यह तथ्य उन्हें आधुनिक जीवन की परम्परा का प्रतिनिधि बना देता है। अधिक-से-अधिक यह कहा जा सकता है कि भारतेन्दु-युगीन एकांकी आधुनिक एकांकियों के प्रारम्भिक रूप हैं।" भारतेन्दु युग के प्रमुख एकांकीकारों में राधाचरण गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', किशोरीलाल गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्ण दास आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी एकांकी की जो स्थिति भारतेन्दु युग में थी लगभग वही स्थिति द्विवेदी युग में भी दिखलाई पड़ती है। यह अवश्य है कि शिल्प की दृष्टि से द्विवेदी युग अपने पूर्ववर्ती भारतेन्दु युग से एक कदम आगे बढ़ा। इस युग में प्रहसन तथा व्यंग्य की कोटि में आने वाले अनेक एकांकियों की रचना हुई। इस युग के एकांकीकारों में रामसिंह वर्मा (रेशमी रुमाल), रूपनारायण पाण्डेय (मूर्ख मंडली), मंगला प्रसाद विश्वकर्मा (शेर सिंह)

Date:
Page No.

सियारामशरण गुप्त (कृष्णा), ब्रजलाल बाजपेयी (नीला, दुर्गावती, पन्ना), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' (चार बेचारे, बेचारा अध्यापक, बेचारा सुधारक), सुदर्शन (प्रताप प्रतिज्ञा, राजपूत की हार, जब आँखें खुलती हैं), पं० बदरीनाथ भट्ट (बापू का स्वर्ग समारोह), वृन्दावन लाल वर्मा (दुरंगी) आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी एकांकी के विकास की दृष्टि से प्रसाद युग विशेष रूप से जाना जाता है। इसे आधुनिक युग भी कहा जाता है। इस युग की आधुनिक एकांकी साहित्य की प्रथम मौलिक कृति जयशंकर प्रसाद की 'एक घूँट' (१९२९ ई०) को माना जाता है। यद्यपि इस एकांकी में भी संस्कृत नाट्यकला की ओर झुकाव है, फिर भी इसमें आधुनिक एकांकी कला का पूर्ण निर्वाह हुआ है। डॉ० दशरथ ओझा के अनुसार, "इतिवृत्त, नायक, संवाद-गति और जीवन-दर्शन के दृष्टिकोण से आधुनिक हिन्दी एकांकी संस्कृत एकांकियों से इतने भिन्न प्रतीत होते हैं कि इन दोनों को पृथक्-पृथक् स्वतंत्र धारा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं जान पड़ती।" इस युग में जिन सामाजिक एकांकियों की रचना हुई है उन पर युगीन सामाजिक पृष्ठभूमि का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है। इस युग के एकांकीकारों में डॉ० राम कुमार वर्मा (पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई,

चारुमित्रा, विभूति, नये बादल, सप्तकिरण, रूपरंग, रजतरश्मि, दीपदान, इन्द्रधनुष), भुवनेश्वर (कारवाँ), उदयशंकर भट्ट (नए निर्वाचन, नए मेहमान, गिरती दीवारें), लक्ष्मीनारायण मिश्र (अशोक वन, प्रलय के पंख, बलहीन, स्वर्ग में विप्लव), उपेन्द्रनाथ अश्क (लक्ष्मी का स्वागत, स्वर्ग की झलक, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, अधिकार का रक्षक), सेठ गोविन्ददास (ईद और होली, स्पर्धा, मैत्री), जगदीशचन्द्र माथुर (भोर का तारा, कलिंग विजय, खण्डहर, घोंसले), विष्णु प्रभाकर आदि प्रमुख हैं।

वस्तुत: इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी एकांकी का विकास क्रमश: भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद या आधुनिक युग में सम्पन्न होता है। भारतेन्दु युग में जो एकांकी लिखे गए वे प्राय: नाटक का ही लघु रूप हैं। इस युग में एकांकी का स्वतंत्र रूप नहीं मिलता है। आधुनिक युग में एकांकी का स्वतंत्र रूप निश्चित हुआ, जिसे एकांकी के क्षेत्र में प्रगति युग कहा जा सकता है।